UGC Care Listed
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Nagfani
RNI No. UTTHIN/2010/34408
वर्ष-12, अंक-43, अक्टूबर - दिसम्बर 2022
भाग-1

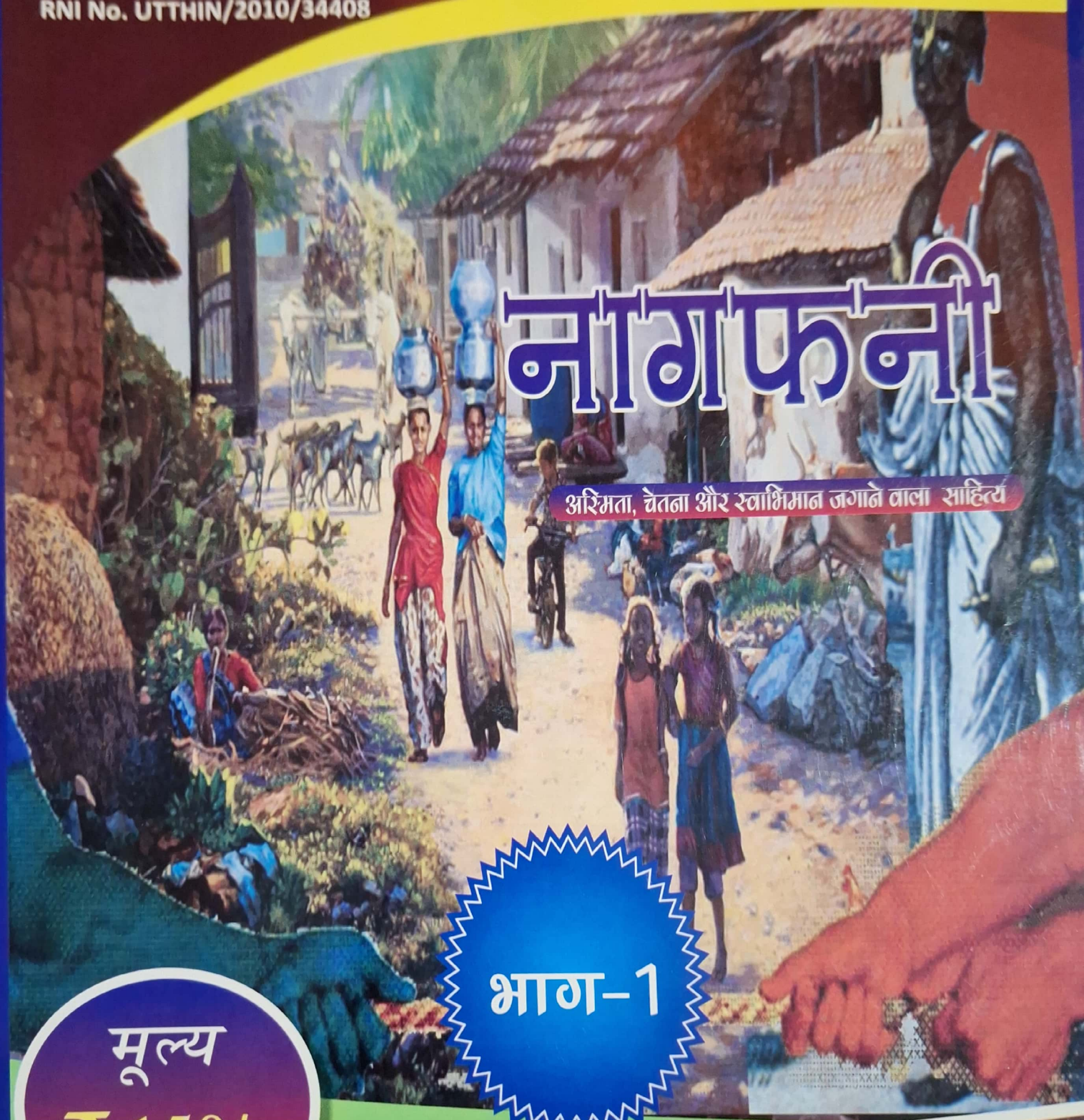

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

भाग-1

मूल्य
₹ 150/-

Scanned with OKEN Scanner

स्त्री विमर्श 100-121

1.पाश्चात्य स्त्री-विमर्श का इतिहास -डॉ.महेश दवंगे 102-103

2.भारत में स्त्री शिक्षा और उनके अधिकार-डॉ.मोहन लाल 'आर्य' 103-104

3.भारतीय नारी और सामाजिक मान्यताएं-डॉ.अरविंद अंबादास घोडके 105-106

4.'औरतें': स्त्री जीवन की व्यथा का ब्यौरा-डॉ.अन्सा ए 106-108

5.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'गुनाह बेगुनाह' में नारी चेतना-अंजलि 109

6.हंडा में दबी हुई स्त्री'-डॉ.मिनी ए.आर 110-111

7.दलित स्त्री आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में चित्रित सांस्कृतिक परिदृश्य-नीतामणि बरदलै/नूरजहान रहमातुल्लाह 111-113

8.लोक कथाओं में चित्रित स्त्री जीवन: मिज़ो लोक कथाओं के संदर्भ में-डॉ.वंदना भारती 114-115

9.आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्ष और स्त्री संघर्ष: महिला उपन्यासकारों के विशेष संदर्भ में-सुशीला/डॉ.मंजुला तोमर 116-117

10.'दक्षिणी कामरूप की 'गाथा'उपन्यास में पुरुष तांत्रिक समाज व्यवस्था का वर्णन-किरण कलिता 118-119

11.हिंदी के समकालीन स्त्री आत्मकथाओं में अभिव्यक्त स्त्री-संघर्ष -सेलीष्या जोसफ/डॉ.मेरली के पुन्नूस 120-121

12.अल्मा कबूतरी उपन्यास में कबूतरा स्त्री-मयूरी मजुमदार 122-123

13.हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन-विनीता ठकरेले लोधी /डॉ.समयलाल प्रजापति 124-125

14.इक्कीसवीं सदी के हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी- बबीता कुमारी 126-127

15.नारी-अस्मिता के प्रश्न और 'ध्रुवस्वामिनी'-डॉ.समरेन्द्र कुमार 128-129

16.अब बाजार स्त्री के कदमों में है : अनीता वर्मा की कविता-कार्तिक राय 130-131

17.पंकज सुबीर की कहानियों में स्त्री छवि-डिन्सी जोर्ज/डॉ.जी.शान्ती 131-133

18.मैला आँचल के स्त्री पात्र-डॉ.माया सगरे-लक्का 133-135

19.हिन्दी और तेलुगु के नारी उपन्यासों में सामाजिक आन्दोलन का प्रभाव(चुने हुए उपन्यासों के संदर्भ में)-बी.रविंदर 135-137

20.महात्मा बुद्ध के शैक्षिक विचारों में नारी शिक्षा की स्थिति का एक अध्ययन-प्रज्ञा बौद्ध /प्रो रामबली यादव 138-139

21. मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में स्त्री विमर्श-सुश्री दुर्गावती

दलित विमर्श 140-141

1.'हमारे हिस्से का सूरज' में अभिव्यक्त दलित चेतना एवं सामाजिक परिवर्तन-डॉ. जी. वी. रत्नाकर 141-144

2.पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए डॉ. बी. आर. अम्बेडकर प्रतिपादित विकास रणनीति की समीक्षा-डॉ.धीरज कदम 144-146

3..डॉ.तुलसी राम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' में अंधविश्वास-डॉ.मृत्युंजय कोईरी 147

4.विमर्श नहीं दलित चेतना है मुक्ति का आधार(ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य)-डॉ.रविन्द्र गासो 148-149

5.'सामाजिक न्याय और अस्मिता संघर्ष के लिए "मादिगा दंडोरा" आंदोलन'-डॉ. जी. राजु 149-151

6.डॉ.अंबेडकर के द्वारा नारी उत्थान हेतु किये गये प्रयासों एवं हिंदू कोड बिल का संक्षिप्त मूल्यांकन-गृहशोभा/डॉ.अनिल कुमार दीक्षित 152-153

7.समतावाद की नींव रखता 'प्रत्यंचा'उपन्यास'-आशा त्रिपाठी/प्रो.दिनेश कुशवाह 153-155

8.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में दलित चेतना- सुनीता सिंह 156-158

9.मुसहर समुदाय का जीवन-संघर्ष-राम नाथ कुमार 159-161

10.दलित साहित्य की वैचारिकी-अंकित कुमार वर्मा 162-163

11.हिन्दी दलित नाटकों में अस्मिताई संघर्ष-विभिषण कुमार

आदिवासी विमर्श

1.पूनम वासम की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन-दृष्टि-लाली कुमारी 164-165

2.राष्ट्र निर्माण के कार्य मे आदिवासी नायकों का योगदान-डॉ.मनोहर भी.येरकलवार 166-168

3.आदिवासी मराठी साहित्य:एक विचार(महाराष्ट्र के आदिवासी जीवन पर आधारित काव्य संग्रह 'वनवासी'के संदर्भ में)-डॉ. नितीन कुमार जानबाजी रामटेके 168-169

किन्नर विमर्श

1.अस्तित्व की तलाश में सिमरन: किन्नर अस्मिता का जीवंत दस्तावेज-डॉ.नीरज शर्मा 170-171

2.किन्नर समाज और मीडिया-डॉ.मीनाक्षी बी. पाटील 172-173

3.भारतीय समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण-घनश्याम कुशवाहा 174-176

4.'नाला सोपारा': अभिशप्त जीवन की त्रासदी-डॉ.गरिमा तिवारी 177-179

विविध विमर्श

1.उच्च शिक्षा : हिंदी भाषा की स्थिति एवं चुनौतियाँ(दक्षिण भारत के हैदराबाद महानगर के संदर्भ में)-डॉ.पठान रहीम खान 180-182

2.पंचयातों में महिला आरक्षण, के 30 वर्ष:सशक्तिकरण यथार्थ या मिथक-डॉ. संजय यादव 183-185

3.भूमि उपयोग का अर्थ एवं महत्व एक भौगोलिक अध्ययन -प्रदीप कुमार/डॉ. सालिक सिंह 186-187

4.भारत के लोकतांत्रिक यात्रा में राजनैतिक पक्ष की भूमिका (स्वतंत्रता पूर्व एवं पाश्चात्य के विशेष संदर्भ में)-डॉ.शशिकांत जे. चवरे 188-192

5समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में वृद्धजनों की समस्याओं का विश्लेषण(बनबसा नगर पंचायत क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)- रेनू बाला 193-195

6.प्राकृतिक आपदाओं का मानव जीवन के आर्थिक विकास पर दुष्प्रभाव तथा इसका प्रबंन्ध झुन्झुनू जिले के सन्दर्भ में-रामावतार वर्मा-डॉ. सालिक सिंह 196-197

7.प्रथम लंदन यात्रा के दौरान मोहनदास के अनुभव: एस.एस. क्लाइड जहाज के संदर्भ में-सूर्य प्रकाश 197-198

8.झुन्झुनू जिले में पर्यावरण अवनयन के कारको एवं होने वाली हानियों के प्रबंधन-एक भौगोलिक अध्ययन-सवित राज/डॉ.सालिक सिंह 199-201

Scanned with OKEN Scanner

किन्नर समाज और मीडिया

डॉ.मीनाक्षी बी.पाटील
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस. बी. कला तथा के. सी. पी. विज्ञान महाविद्यालय,विजयपुरकर्नाटक मो.- 8762591994

किन्नर और मीडीया का सीधा संबंध समाज से जुड़ा है। यह वही समाज है जहाँ आप और हम सब मिलकर जीवन व्यापन करते है। अगर इसे व्यवस्थित रुप से परिभाषित करें तो, समाज एक से अधिक लोगों के समुदायों से मिलकर बनता है, जहाँ व्यक्ति-व्यक्तियों के बीच संबंध स्थापित होता है। रायट के शब्दों में "यह व्यक्तियों का एक समूह नहीं है, अपितु विभिन्न समूहों के व्यक्तियों के बीच संबंधों की व्यवस्था है।"[1] अगर यह विभिन्न समूहों के व्यक्तियों के बीच संबंधों की व्यवस्था है, तो सभी व्यक्तियों के बीच में मानवीय क्रियाकलाप, क्रियाकलाप में आचरण, सामाजिक सुरक्षा, निर्वाह आदि क्रियायें अवश्य होती हैं। यहाँ मानवीय क्रियाकलाप को रेखांकित कर इस पर गहन चिंतन-मनन करने पर भी हम समाज के उस वर्ग तक नहीं पहुँच सकते, जो हमारे ही समाज में हमारे साथ रहकर भी समाज से कटे हुए हैं, उपेक्षित हैं।

हाँ, मैं उन्हीं की बात कर रही हूँ जिन्हें हम शारीरिक विद्रूपता या लैंगिक भिन्नता के कारण थर्ड जेंड़र, तृतीय लिंगी, किन्नर, ट्रांसजेंड़र, हिजड़ा, क्लीव, शिव-शक्ति, मंगलमुखी, सखी, जोगता, नपुंसक, जोगप्पा, छक्का आदि कई नामों से पहचानते है। लैंगिक भिन्नता के कारण ये समाज के मुख्य धारा से अलग हो जाते हैं। इन्हें समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए सरकार तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों के द्वारा कई प्रयास किए जा रहे हैं, परंतु परिणाम लक्ष्य के कई गुना पीछे हैं। ऐसे संदर्भ में 'लोकतंत्र का चौथा स्तंभ-मीडिया' की सहायता लेनी चाहिए। क्योंकि वर्तमान युग में समाज के विकास के लिए मीडिया की अहम् भूमिका रही है। मीडिया के माध्यम से समाज का हित साधना संभव हो गया है। प्रेस, टेलीविज़न,रेडियो, सिनेमा, इंटरनेट, ट्वीटर, इन्स्टाग्राम, फेसबुक, आदि के साथ-साथ कई वैज्ञानिक तथा अत्याधुनिक संचार माध्यम भी जुड़े हैं, जिन्हें हम सोशियल मीडिया के नाम से अभिहित करते हैं। इन सब का लक्ष्य होता है जनता के समस्याओं का समाधान तुरंत करना। इसलिए आज के दौर में मीडिया की उपयोगिता, महत्ता एवं भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। ऐसी स्थिति में समाज के उपेक्षित वर्ग के प्रति मीडिया को संवेदनशील होना आवश्यक है।

बात जब मीडिया और समाज की आती है, तो मीडिया को समाज में जागरुकता उत्पन्न करनेवाला सशक्त माध्यम कहा जा सकता है। यह समाज को सत्य असत्य की दिशा दिखाता है। जहाँ कहीं भी अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, शोषण आदि हो रहा हो, तो तुरंत मीडिया पीडितों का सहारा बनता दिखाई देता है। मीडिया समाज को सजग एवं सक्रीय बनाने का साधन है। पर मेरे मन में एक बात खटकती है और यह सोचने पर विवश करती है कि क्यों मीडिया किन्नरों को नज़र अंदाज़ कर रहा है? जिस मीडिया को मीडियम का माध्यम कहा जाता है, जो समाज में शांति, सौहार्द, समरसता, एकरुपता और सौजन्य की भावना विकसित कर सकता है वह किन्नरों के प्रति क्यों चुप है? कहा जाता है कि मीडिया समाज का निर्माण व पुनर्निमाण करता है तो यह किन्नरों का जीवन स्थापित करने में सहायता क्यों नहीं कर रहा है? मेरे मन में ऐसे कई सवाल उठते हैं और उठना स्वाभाविक भी है। क्योंकि मीडिया को जनता तक पहुँचने का सशक्त माध्यम कहा जाता है। चाहे वह टेलीविज़न हो, पत्र-पत्रिकाएँ हों, इन्स्टाग्राम हों, फेसबुक हों या सबसे प्रभावी माध्यम सिनेमा हो। इनके माध्यम से किन्नरों की वेदना, संघर्षमय जीवन, समाज के उपहास को झेलते हुए जीवन में सफलता प्राप्त किन्नरों पर विशेष कार्यक्रम क्यों नहीं दिखाते हैं? सिनेमाओं में, धारावारिकों में, साहित्य में कहीं भी इनका जिक्र आता है तो वे रेल में या किसी भीड़ में पैसा वसूल कर रहे होते हैं या फिर किसी के जन्म या विवाह आदि शुभ अवसर पर मंगलकामना करके बख्शिश प्राप्त करते दिखाई देते हैं। परंतु समाज में ऐसे भी किन्नर हैं जिन्होंने समाज की विकृत सोच से जूझते हुए सफलता हासिल की है। ई-पत्रिका प्रभा साक्षी में छपे लेख लैंगिक भिन्नता के शिकार किन्नर आखिर कैसे जुड़ेंगे समाज की मुख्य धारा से? आलेख में ऐसे ही सफलता प्राप्त किन्नरों के बारे में उल्लेख करते हुए लिखा गया है कि "कई ऐसे किन्नर हैं जिन्होंने समाज की इस विकृत सोच से जूझते हुए स्वयं को लीक से हटकर खड़ा करने में सफलता प्राप्त की। उनमें से एक है कलकी सुब्रमण्यम, जिन्होंने स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद स्वयं को सामाजिक कार्यकर्ता तथा पत्रकार के रुप में प्रतिष्ठित किया है। दूसरा नाम पद्मिनी प्रकाश का है, जो कि एक कथक नर्तकी तथा गायक कलाकार है। मधुबाई छत्तीसगढ़ के रायगढ़ की मेयर रह चुकी है। भारती नाम की किन्नर ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया और थियोलॉजी में स्नातक की उपाधि प्राप्त करके इन्जील्वादी चर्च में पादरी बन गई। मानवी बंधोपाध्याय विवेकानंद सतोबारशिकी महाविद्यालय में बंगाली भाषा की सहायक प्रोफेसर हैं। इन्होंने किन्नरों के जीवन पर आधारित एंडलेस बॉंडेज नामक उपन्यास भी लिखा है। कानपुर की काजल किरण पार्षद रह चुकी है और समाज सेविका के रुप में प्रतिष्ठित हैं। तमिलनाडु की पृथिका याशिनी को लंबी अदालती लड़ाई के बाद एक इन्सपेक्टर के पद पर तैनाती प्राप्त हुई। कोलकत्ता की जोयिता मंडल लंबे सामाजिक संघर्ष के बाद इस्लामपुर की लोक अदालत में न्यायाधीश के पद पर कार्यरत हैं। राजस्थान की गंगा कुमारी ने भी लंबी अदालती लडाई के बाद अन्तोगोत्वा कान्स्टेबल पद पर नियुत्ति प्राप्त की।"[2] किन्नर अपनी अस्मिता की खोज और अस्तित्व को खायम रखने के लिए समाज में अपनों के बीच संघर्ष कर रहें। ऐसे संघर्षमय जीवन गाथा का सिनेमा के माध्यम से समाज में प्रस्तुत करते हैं, तो इससे कई किन्नरों को प्रेरणा मिलेगी। जिससे वे अपना व्यक्तित्व स्वयं निर्माण कर सकेंगे। परंतु विपर्यास यह है कि आज मीडिया उन्हीं को जगह दे रहा है जिससे उन्हें टी. आर. पी मिलती है और आर्थिक लाभ होता है।

आज सिनेमा नई विचारधारा और नवीन विषय को उजागर करके लोकप्रिय होने लगे हैं। नारी समस्या, दलित उत्पीड़न, निम्न वर्ग की समस्याएँ एवं प्राकृतिक समस्याएँ, पिछड़ा वर्ग, निर्वासित वर्ग फिल्म के केंद्र में आ गए हैं किन्नरों को छोड़कर। अगर किन्नरों की बात उठाते हैं तो भी वह गौण रुप से। मीडिया से रुबरू होते किन्नर इकबाल ने कहा कि – "एक पहचान काफी है। सरकार ने थर्ड जेंडर का दर्जा देकर नेक काम किया है। हमारा समज दूसरों की खुशियों में शरीक होता है। समाज मानता है कि बेला पर हमारे कदम पड़ने से खुशियों में और भी इज़ाफा होता है।"[3] ऐसे विषयों को लेकर छोटे-छोटे डाकुम्येंटरी फिल्में बनाकर समाज में संघर्षरथ वर्ग के प्रति संवेदना व्यक्त करना मीडिया का दायित्व बनता है। सामाजिक रुढ़ियों से त्रस्त किन्नरों, समाज की पूर्व परंपरा तथा अलिखित नियमों के प्रति घृणा, सामाजिक हक की लड़ाई आदि पर फिल्म निर्माताओं को ध्यान देकर फिल्में बननी चाहिए। इससे समाज और सरकार दोनों इस वर्ग के हित पर विचार कर पायेगा।

कानपुर में रहनेवाली किन्नर पनम बताती है कि "समाज में हमें अलग तरीके से देखा जाता है, लेकिन मैं भी जीना चाहती हूँ और मैं भी एक इंसान हूं। किन्नर कहकर जब कोई बुलाता है तो बहुत बुरा लगता है, लेकिन न मैं इधर की हूँ, न उधर की हूँ। लेकिन जीना तो है ही। हमें न कोई नौकरी मिलती है और न ही कोई रहने का ठिकाना। हमारे घर में हमारे माता-पिता बहनें सब हैं। इन सब के होने के बावजूद भी समाज हमें उनके साथ नहीं रहने देता है। सब बोलते हैं कि किन्नर है इसको हटाओ। समाज के डर से हमें अपना घर छोड़कर जाना पड़ता है।"[4] परिवार से अलग होने पर इनके सामने ऐसे कई सवाल हो सकते हैं। इसलिए सरकार इनके लिए अनाथालय बनव दें तो इनकी एक समस्या दूर हो जायेगी। दूसरी है नौकरी की समस्या। जिसे पाने के लिए उन्हें सुशिक्षित होना अनिवार्य होता है। लेकिन समाज जैसे-जैसे जागरुक तथा सुशिक्षित बनता जा रहा है वैसे-वैसे समुदायों की बीच की दूरियाँ भी कम होती जा रही है। इसका एक ज्वलंत उदाहरण है सत्यश्री शर्मिला। यह भारत की प्रथम किन्नर वकील है। वह अपने ट्विटर पर लिखती है कि "भारत की पहली ट्रांसजेंडर वकील के रुप में आज मैंने अपना नाम तमिलनाडु तथा पुदुचेरी बार काउंसिल में पंजीकरण करवाया है। मैंने जीवन में बहुत संघर्ष

किया है मुझे उम्मीद है कि मेरे समुदाय के लोग अच्छा काम करेंगे और देश भर में उच्च पदों पर आसीन होंगे"[3] उच्च पदों को तभी हासिल करेंगे जब उन्हें शिक्षा प्राप्त होगी। परंतु सामान्य स्कूल कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ रहा है, तो क्यों न इनके लिए अलग से स्कूल कॉलेजों की स्थापना करें। देश की पहली ट्रांसजेंडर क्वीन यानी मिस ट्रांसजेंडर निताशा का मानना है कि समाज में किन्नरों के साथ हो रहे भेदभाव के कारण देश के 70% किन्नर डीप्रेशन का शिकार बने हैं। इनके अशिक्षित होने से अधिकांश किन्नर सेक्स वर्कर बन जाते हैं। मीडिया को ऐसे समाज के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर समाज के हित में कार्य करना चाहिए। इनमें से कई किन्नर ऐसे भी हो सकते हैं जो खेल कूद के क्षेत्र में सक्षम हो। ऐसे किन्नरों को प्रेरित करने के लिए कई तरह के प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न करने का कार्य मीडिया के क्षेत्र में होना चाहिए। क्योंकि आज के संदर्भ में समाज और सामाजिक परिवेश पर मीडिया का प्रभाव अधिक रहा है। इससे सरकार और समाज दोनों ही इस वर्ग के प्रति जागरूक होंगे तथा किन्नरों का मनोबल भी बढ़ेगा।

सरकार तथा मीडिया को स्त्री सशक्तिकरण की तरह किन्नरों के सशक्तिकरण पर भी बल देना चाहिए। मीडिया हमेशा परोपकारी एवं कल्याणकारी भाव स्वरूप को लेकर आगे बढ़ता है तो, मीडिया को सरकार से आग्रह करना चाहिए कि सरकार या विभिन्न संस्थानों के द्वारा जितना सहयोग महिलाओं को मिलता है उतना ही सहयोग किन्नरों को दे। इनमें भी छोटे-छोटे गृह उद्योगों के प्रति रुचि उत्पन्न करना चाहिए और इन्हें आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए कई योजनाओं को घोषित कर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर करने की ओर पहल करनी चाहिए। क्योंकि आज के दौर में समाज का प्रत्येक समुदाय देश के विकास में अपना सहयोग देने के लिए तैयार है। किन्नर समुदाय में कल्कि सुब्रमण्यम पहली ट्रांसजेंडर एंटरप्रेन्योर है। मीडिया ऐसे एंटरप्रेन्योरों को समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं तो इससे समाज के कई किन्नरों को प्रेरणा मिलेगी और वे रेल के डिब्बों में या सिग्नलों में भीख माँगने के बजाय स्वयं एक एंटरप्रएन्योर के रूप में समाज में आदर सम्मान के साथ जीवन व्यापन कर सकेंगे। इसी तरह कला के क्षेत्र में जैसे कि चित्रकला, संगीत वाद्यों को बजाने या नृत्य कला जैसे विद्याओं में निपुणता प्राप्त कर लेंगे तो वे अपने अंदर छिपे हुनर को पूरे विश्व के सामने प्रस्तुत कर सकेंगे। इससे किन्नर समुदाय के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में सुधार होगा। मीडिया तथा समाज से हम केवल इतनी आशा कर सकते हैं कि जीवन भर दूसरों की खुशियों में शामिल हो कर दूसरों के लिए मंगलकामना करने वालों के प्रति हमारी भी कुछ जिम्मेदारी बनती है कि हमें उनकी बेबसी पर हँसी न उड़ाकर उनके समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करना चाहिए। सरकार द्वारा इस समुदाय को प्राप्त होने वाले योजनाओं के बारे में मीडिया के माध्यम से प्रचार-प्रसार करने का एक छोटा सा प्रयास करें। इन्हें सेक्स वर्कर बनने से रोके तथा सही शिक्षा प्रदान की जाय या स्वयं उद्योग स्थापित कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रशिक्षित करे, ताकि वे अपना जीवन स्वयं सवार सकें। मैं अपने विचारों को पूर्ण विराम लगाने से पहले केवल इतना कहना चाहती हूँ कि आज की प्रशासकीय व्यवस्था में ये फिर से अकबर के यूना तो नहीं बन सकते लेकिन यूना को समाज में जो सम्मान प्राप्त होता था वह वे अवश्य पा लेंगे।

*****

संदर्भ सूची:-

1. https:// www.kailasheducation.com/2020/06/samaj-arth-paribhasha-visheshtaye.html 03 Aug 2022
2. https://www.prabhasakshi.com/politics-articles/kinnar-society-is-victim-of-gender-differences 21-oct-2019
3. https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/fatehpur/hamaare-samaaj-ko-kinnar-kahen-aur-kuchh-nahin 03 June 2016
4. https://www.gaonconnection.com/desh/kinnar-transgender-life-india-kanpur-slife-of-life-mobile-chaupal-41338 30 May 2019
5. www.patrika.com /miscellenous-india/satya-shri-sharmila 30 June 2018

तथागत बुद्ध के अनमोल विचार

1. अगर आपको मोक्ष पाना है तो आपको खुद ही मेहनत करनी होगी, दूसरों पर निर्भर मत रहिए.
2. सूरज, चांद और सत्य यह तीन चीजें जो ज्यादा देर तक नहीं छुप सकती.
3. जिस तरह कोई मोमबत्ती बिना आग के नहीं जल सकती, उसी तरह मनुष्य भी बिना आध्यात्मिक ज्ञान के जीवन नहीं जी सकता.
4. स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन और वफादारी सबसे बड़ा संबंध है.
5. अतीत पे ध्यान मत दो और ना ही भविष्य के बारे में सोचो. हमेशा अपने मन को वर्तमान क्षण पर ही केन्द्रित रखो.
6. क्रोध, जलते हुए कोयले को किसी दूसरे व्यक्ति पर फेंकने की इच्छा से पकड़े रहने के समान है यह सबसे पहले आपका हाँथ ही जलाएगा.
7. हम आज जोभी हैं वे हमने जा आज तक सोचा था और किया था उसका ही परिणाम है, यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच के साथ बोलता या काम करता है, तो उसे कष्ट ही मिलता है. इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति शुद्ध विचारों के साथ बोलता या काम करता है, तो उसकी परछाई की तरह खुशी उसका साथ कभी नहीं छोड़ती.
8. केवल भौकने से एक कुत्ता अच्छा नहीं हो जाता, इसी प्रकार केवल बोलने से ही एक व्यक्ति ज्ञानी नहीं हो जाता.
9. हर व्यक्ति अपनी सेहत और बीमारी के लिए खुद जिम्मेदार है.
10. खुशियां पैसों से खरीदी नहीं जा सकती, खुशिया इस बात से मिलती हैं की हम कैसा महसूस कर रहें हैं, दूसरों से कैसा व्यव्हार कर रहे हैं, और दूसरे के व्यवहार का कैसा जवाब देते हैं.
11. बूंद-बूंद से ही घड़ा भरता है।
12. अज्ञानता ही सबसे काली रात है।

****

ISSN-1504Nagfani RNIN.-UTTHIN/2010/34408

Scanned with OKEN Scanner